A BUSINESS BOOK

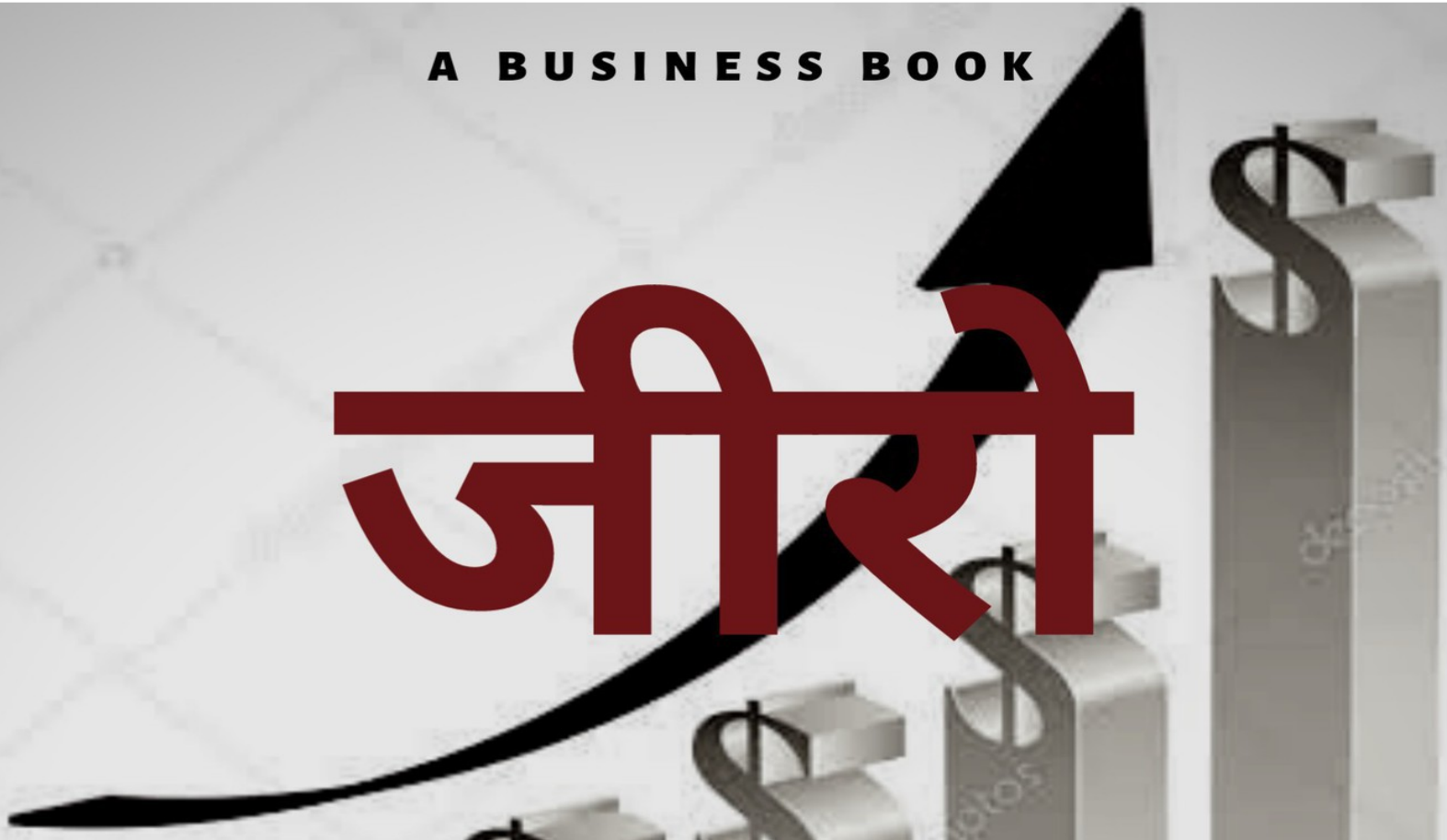

जीरो टू वन (हिंदी में)

लेखक:पीटर थील

A BUSINESS BOOK
जीरो

धन
(हिंदी में)

लेखक:पीटर थील

परिचय
अध्याय 1- भविष्य की चुनौती
अध्याय 2- साल 1999 की तरह उत्सव मनाएं
अध्याय 3- कामयाब कंपनियां अलग दिखती हैं
अध्याय 4- प्रतिस्पर्धा की विचारधारा
अध्याय 5- अंतिम लाभ
अध्याय 6- आप एक लौटरी टिकेट नहीं हैं
अध्याय 7- पैसे का पीछा करें
अध्याय 8- रहस्य
अध्याय 9- नीव
अध्याय 10- मोनोपॉली और संगठनकर्ता
अध्याय 11- यदि इसे बनाया जाए तो क्या वे आयेंगे ?
अध्याय 12- मनुष्य और मशीन
अध्याय 13- आशावादी रहें
अध्याय 14- संस्थापकों के विरोधाभास

जीरो टू वन

लेखक : पीटर थिएल

अगला बिल गेट्स ऑपरेटिंग सिस्टम, लैरी पेज या सर्गेई ब्रिन एक सर्च इंजन नहीं बनायेगा। यदि आप इन लोगों की नकल बना रहे हैं, तो आप उनसे कुछ नहीं सीख रहे हैं। कुछ नया बनाने की बजाए मॉडल की नकल बनाना आसान है: प्रत्येक नई रचना 0 से 1तक ले जाती है। यह पुस्तक इस बारे में है कि वहां कैसे पहुंचे।

परिचय

व्यवसाय में हर मौका केवल एक बार आता है। अगला बिल गेट्स एक ऑपरेटिंग सिस्टम नहीं बनाएगा। अगला लैरी पेज या सर्गेई ब्रिन एक सर्च इंजन नहीं बनायेगा। और अगला मार्क जुकरबर्ग एक सोशल नेटवर्क नहीं बनाएगा। यदि आप इन लोगों की कॉपी बना रहे हैं, तो आप उनसे कुछ सीख नहीं रहे हैं।

बेशक, कुछ नया बनाने के बजाय किसी भी मॉडल में थोड़ा फेरबदल कर नकल बनाना आसान है। ऐसा करना दुनिया को 1 से N तक ले जाता है। लेकिन हर बार जब हम कुछ नया बनाते हैं, तो हम 0 से 1 तक जाते हैं। हर बार कुछ नया बनाने के कार्य के परिणाम बहुत ही अलग और अजीब होते है।

जब तक कंपनियां नई चीजों को बनाने के कठिन कार्य में निवेश नहीं करती, तब तक वे भविष्य में असफल ही रहेंगी इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उनके मुनाफे आज कितने बड़े हैं। हमें जो विरासत में मिला है वह व्यवसाय की पुरानी तकनीकों को ठीक से प्रयोग करने से मिला है। लेकिन अब जितना आसान लगता है वह उतना ही असंभव है। यह स्थिति 2008 के संकट से कहीं ज्यादा बदतर दिखाई देती है। आजकल की "सर्वोत्तम मान्यताओं" के कारण नए रास्ते अवरुद्ध हो गए है।

विशाल प्रशासनिक नौकरशाहों की दुनिया में सार्वजनिक और निजी दोनों, एक नए रास्ते की तलाश में एक चमत्कार की उम्मीद लगाये बैठे है। यदि अमेरिकी व्यवसाय सफल होने जा रहा है, तो हमें असल में सैकड़ों नहीं हजारों चमत्कारों की आवश्यकता होगी। यह एक महत्वपूर्ण तथा निराशाजनक तथ्य है कि मनुष्य अन्य प्रजातियों से ज्यादा, चमत्कारों के काम करने की क्षमता बढाने की तकनीक को खोजता रहता हैं।

प्रौद्योगिकी चमत्कारी है क्योंकि यह हमें हमारी मौलिक क्षमताओं को उच्च स्तर तक पहुंचाने के लिए कम प्रयास से अधिक काम करने की ताकत प्रदान करती है। अन्य जानवरों को सहज रूप से बांधों या हनीकॉम जैसी चीजों को बनाने के लिए प्रेरित किया जाता है, लेकिन हम केवल वे हैं जो नई चीजों का आविष्कार कर सकते हैं और उन्हें बनाने के बेहतर तरीके खोज सकते हैं। मनुष्य तय नहीं करते कि दिए गए विकल्पों की ब्रह्मांडीय क्षमता को विकल्प बनाकर क्या बनाना है; इसके बजाय, नई प्रौद्योगिकियां बनाकर, हम दुनिया की योजना को फिर से लिख सकते हैं। ये प्राथमिक सत्य हैं जो हम दूसरों को

सिखाते हैं, एक ऐसी दुनिया बनाना आसान हैं जहां हम जो भी करते हैं, जिसे पहले किया गया है उसी को दोहराया जाता है ।

शून्य से एक नई कंपनियों को बनाने वाली कंपनियों को बनाने के बारे में है। यह पेपैल और पलंतिर के सह-संस्थापक और फिर फेसबुक और स्पेसएक्स समेत सैकड़ों स्टार्टअप में निवेशक के रूप में सीखा है। लेकिन जब मैंने कई पैटर्न देखे हैं, और मैं उन्हें जोड़ता हूं, तो यह पुस्तक सफलता के लिए कोई सूत्र नहीं देती है। शिक्षण उद्यमिता का विरोधाभास यह है कि ऐसा सूत्र आवश्यक रूप से अस्तित्व में नहीं हो सकता है; क्योंकि प्रत्येक नवाचार नया और अनूठा होता है, कोई भी प्राधिकरण कंक्रीट शर्तों में अभिनव नहीं कर सकता है कि कैसे अभिनव होना चाहिए। दरअसल, मैंने देखा है कि एकमात्र सबसे शक्तिशाली पैटर्न यह है कि सफल लोगों को अप्रत्याशित स्थानों में हाई रेट मिलता है, और वे सूत्रों के बजाय सिद्धांतों से व्यवसाय के बारे में सोचकर ऐसा करते हैं।

यह पुस्तक स्टार्टअप के बारे में एक कोर्स से उत्पन्न होती है जिसे मैंने 2012 में स्टैनफोर्ड में पढ़ाया था। कॉलेज के छात्र कुछ विशेषताओं में बेहद कुशल बन सकते हैं, लेकिन कई लोग कभी नहीं सीखते कि दुनिया में उनके कौशल के साथ वे क्या करें । कक्षा को पढ़ाने में मेरा प्राथमिक लक्ष्य था कि मेरे छात्रों को अकादमिक विशिष्टताओं द्वारा बनाए गए ट्रैकों से परे व्यापक भविष्य में देखने के लिए मदद मिले। उन छात्रों में से एक, ब्लेक मास्टर्स ने विस्तृत कक्षा नोट्स ले लिए, जो कैंपस से बहुत दूर फैले हुए थे, और ज़ीरो टू वन में मैंने व्यापक दर्शकों के लिए नोट्स संशोधित करने के लिए उनके साथ काम किया है। ऐसा कोई कारण नहीं है कि भविष्य केवल स्टैनफोर्ड, या कॉलेज में, या सिलिकॉन वैली में होना चाहिए।

अध्याय 1- भविष्य की चुनौती

जब भी मैं किसी नौकरी के लिए किसी का साक्षात्कार लेता हूं, तो मैं इस सवाल से शुरू करता हूं: “क्या आप कोई ऐसा महत्वपूर्ण सत्य जानते है जिससे बहुत कम लोग सहमत

हों?”

यह सवाल सुनने में आसान लगता है क्योंकि यह सीधा है। असल में, जवाब देना बहुत मुश्किल है। यह बौद्धिक रूप से कठिन है क्योंकि स्कूल में हर किसी को जो ज्ञान सिखाया जाता है वह परिभाषा पर निर्भर करता है। और यह मनोवैज्ञानिक रूप से भी कठिन है क्योंकि उत्तर देने का प्रयास करने वाला कुछ ऐसा कहेगा जो ज्यादा प्रसिद्ध नहीं है जिसे वो जानता है। हम जानते है की शानदार सोच दुर्लभ है, लेकिन यह भी तो सच है कि साहस, प्रतिभा की तुलना में कम नहीं होना चाहिए।

आमतौर पर, मैं इस तरह के उत्तर सुनता हूं:

“हमारी शैक्षणिक प्रणाली टूट गई है और तत्काल इसे ठीक करने की जरूरत है।” या

“अमेरिका असाधारण है।” या

“कोई भगवान नहीं है।” आदि आदि

ये बुरे जवाब हैं। पहला और दूसरा कथन सत्य हो सकता है, लेकिन कई लोग पहले से ही उनके साथ सहमत हैं। तीसरा उत्तर बस एक परिचित बहस को एक तरफ ले जाता है। एक अच्छा जवाब निम्नलिखित रूप में हो सकता है: “अधिकांश लोग एक्स में विश्वास करते हैं, लेकिन सत्य एक्स के विपरीत है।” मैं इस अध्याय में बाद में अपना उत्तर दूंगा।

इस विरोधाभासी प्रश्न का भविष्य के साथ क्या सम्बन्ध है? सबसे कम शब्दों में इसका अर्थ यह है कि भविष्य बस आने वाले सभी क्षणों का एक सेट मात्र है। लेकिन भविष्य को विशिष्ट और महत्वपूर्ण वह बनाता है जो कि अभी तक घटित नहीं हुआ है, बल्कि यह एक ऐसा समय होगा जब दुनिया आज से अलग दिखाई देगी। इसका मतलब है की अगर हमारे समाज में अगले 100 वर्षों तक कुछ भी नहीं बदलता है, तो भविष्य 100 साल से अधिक दूर है। अगर अगले दशक में चीजें मूल रूप से बदलती हैं, तो भविष्य लगभग हाथ में है। कोई भी भविष्य की सटीक भविष्यवाणी नहीं कर सकता, लेकिन हम दो चीजें जानते हैं: की कुछ अलग होने जा रहा है, और यह आज की दुनिया का मूल है। विरोधाभासी प्रश्न के अधिकांश जवाब वर्तमान को देखने के विभिन्न तरीके हैं; अच्छे जवाब निकट हैं क्योंकि हम भविष्य देखने वाले है।

जीरो टू वन : प्रगति का भविष्य